श्री महावीराय नमः   जैनं जयति शासनम्   श्रीमत् सुदर्शन गुरवे नमः

जैन संस्कार शिविर

पाठ्यक्रम भाग-2

जैन संस्कार शिविर समिति

A step for the Jain youth of tomorrow

संस्करण : 2025

प्रकाशकीय

भारत देश उच्च संस्कृति वाला देश रहा है और इस संस्कृति की उज्ज्वलता बनाये रखने हेतु विभिन्न समाजों में बच्चों व युवाओं को नैतिक व धार्मिक संस्कार प्रदान करने के प्रयास चलते रहते हैं।

पूज्य गुरुदेव संघ-शास्ता शासन-प्रभावक श्री सुदर्शन लाल जी म. सा. के मुनि-संघ के महामुनिराज महास्थविर, गणाधीश श्री प्रकाश चन्द्र जी म., संघनायक 'शास्त्री' श्री पद्मचन्द्र जी म., संघ संचालक मनोहर व्याख्यानी श्री नरेश मुनि जी म. तथा इनके संघवर्ती अन्य विद्वान् मुनिराजों एवं महासतियों के कृपापूर्ण आशीर्वाद से **'जैन संस्कार शिविर समिति, दिल्ली'** द्वारा सन् 2012 से उत्तर भारत के कई प्रान्तों में स्थानीय एस. एस. जैन सभाओं के सहयोग से जैन-संस्कार-शिविर लगाए जा रहे हैं। ये शिविर पूर्णरूप से सम्प्रदाय-निरपेक्ष हैं।

शिविरों के लिए समिति हर 2-3 वर्ष के अन्तराल पर पुस्तकों के पाठ्यक्रम में परिवर्तन करती रहती है। इस वर्ष हमने शिविर की पुस्तकों में 'गुरु सुदर्शन संघ' के मुनिराज श्रद्धेय श्री दिनेश मुनि जी म. द्वारा लिखित व **"जय जिनशासन प्रकाशन"** द्वारा प्रकाशित पुस्तक **'25 बोल with a twist'** और **'cool-cool गुरुकुल'** के कुछेक पाठों का मिश्रण कर विषय-वस्तु को अधिक रोचक बनाने का प्रयास किया है। आशा है, पाठकों को यह प्रयास अच्छा लगेगा।

इस पुस्तक के निर्माण में अनेक पूज्य गुरु भगवन्तों व विभिन्न लेखकों की रचनाओं का विनम्र सहयोग लिया गया है। हम उन सब के हृदय से आभारी हैं।

इस पुस्तक को प्रत्येक जैन सूक्ष्मता से पढ़े, समझे और उस पर आचरण करे। हमें आशा है कि यह पुस्तक बालकों तथा युवाओं को जैन धर्म के संस्कार देने में सफल रहेगी।

इसी मंगल मनीषा के साथ...

रवीन्द्र जैन
शिविर-संयोजक

प्रकाशक :
जय जिनशासन प्रकाशन
212, वीर अपार्टमैन्टस्, सैक्टर 13,
रोहिणी, दिल्ली-110 085
Mob: +91-98102 87446
Email : jaijinshaasanprakaashan@gmail.com

रूपांकन :
सिस्टम्स् विज़न, नई दिल्ली
Mob: +91-98102 12565
मुद्रक :
पारस ऑफसैट प्रा. लि., दिल्ली
Email: info@parasoffset.com

श्री मया-मदन-सुदर्शन-प्रकाश-पद्म-नरेश गुरुभ्यो नमः

विषयक्रम

क्रमांक शीर्षक पृष्ठ संख्या

सूत्र विभाग

1. सामायिक-सूत्र अर्थ सहित 2
2. सम्यक्त्व-सूत्र अर्थ सहित 5

तत्त्व विभाग

3. 18 पापों के नाम 7
4. जैन धर्म के तीन सिद्धान्त – Three Signals 8
5. इन्द्रिय पाँच – *Doraemon* की *Pocket* में क्या है? 11
6. पर्याप्ति छः– My Dream Home 15
7. प्राण दस – मेरे बेटे को बचा लीजिये 19
8. शरीर पाँच – गड्डी जांदी है छलांगा मार दी 23
9. कर्म आठ – समोसा 27

सामान्य ज्ञान व कथा विभाग

10. भगवान् पार्श्वनाथ का जीवन परिचय 31
11. भ. महावीर के 11 गणधर 32
12. ऐसे थे महावीर 33
13. सीखो महावीर से 34
14. बत्तीस आगम 36
15. Jain Logo 38
16. Body Parts 39
17. अंगुलियाँ क्या कहती हैं? 40
18. इतिहास के झरोखे से 41
19. ज्ञान वृद्धि के उपाय 43

काव्य विभाग

20. जिनवाणी स्तवन 43
21. मंगल पाठ 44

1. सामायिक सूत्र

मूल पाठः

करेमि भंते! सामाइयं, सावज्जं जोगं पच्चक्खामि
जाव नियमं मुहूर्त पज्जुवासामि दुविहं तिविहेणं
न करेमि, न कारवेमि, मणसा, वयसा, कायसा,
तस्स भंते! पडिक्कमामि, निंदामि, गरिहामि,
अप्पाणं वोसिरामि।

अर्थः

करेमि भंते सामाइयं	हे भगवन् (मैं) सामायिक करता हूँ
सावज्जं जोगं पच्चक्खामि	पाप सहित कार्यों का त्याग करता हूँ (i.e. I Forbid All Actions, Which involve Sins)
जाव नियमं + मुहूर्त पज्जुवासामि	जब तक नियम की उपासना करूं (I worship till my Vow lasts)
दुविहं, तिविहेणं	दो करणः करना, करवाना तीन योगः मन योग, वचन योग, काया योग (ie With Two Fold Activities & Three Fold Yoga)
न करेमि, न कारवेमि	न स्वयं करूंगा, न करवाऊंगा। (I will not Do Myself Nor Will Make Others to do Sinful Activities)
मणसा, वयसा, कायसा	मन से, वचन से, काया से (By Mind, By Speech, By Body)
तस्स भंते! पडिक्कमामि	हे भगवन्! उसका (पूर्व के किये हुए पापों का) प्रतिक्रमण करता हूँ (O Lord! I Restrain & Remove My self from All the Sins of past)

निदांमि, गरिहामि	निंदा करता हूँ, गर्हा करता हूँ (आत्म साक्षी से) (I hate or censure the sins with the Attestations of my Soul, I reprove the sins with the perception of my Dharm Guru)
अप्पाणं वोसिरामि	अपनी आत्मा को अलग करता हूँ (पापों से) (I Vow to Free my Soul from Sins)

हमने पुस्तक भाग-1 में धर्म और पाप सम्बन्धित क्रियाओं (Activities Involving Dharm & Sins) के बारे में जाना था। **जैन धर्म के अनुसार सभी पाप क्रियाओं को 18 भागों में बांटा जा सकता है** और अगर हम इन 18 पाप क्रियाओ का करना बंद कर देगे तो धर्म (Dharm) अपने आप हो जाएगा, उसके लिए हमें अलग से कोई और अन्य प्रयास नहीं करना पड़ेगा। अतः हम यह भी कह सकते हैं कि 18 पापों की वृत्ति और प्रवृत्ति छोड़कर समभाव प्राप्त करने को सामायिक कहते हैं।

सबसे महत्त्वपूर्ण बात यह है कि सामायिक की अवधि के बीच हम कोई भी पाप क्रिया मन से, वचन से, काया से न करते हैं और न ही करवाते हैं।

सामायिक यदि पूर्ण विधि से ग्रहण की जाए और पारी (समाप्त) जाए तो विशेष लाभकारी रहती है।

सामायिक के 9 पाठ हैं:—

1. नवकार-सूत्र 2. गुरुवन्दन-सूत्र 3. सम्यक्त्व-सूत्र 4. आलोचना-सूत्र 5. कायोत्सर्ग-सूत्र 6. चतुर्विंशति-स्तव-सूत्र 7. प्रतिज्ञा-सूत्र (सामायिक-सूत्र) 8. शक्रस्तव-सूत्र 9. सामायिक-समाप्ति-सूत्र

सामायिक करने की विधिः

1. पहले स्थान, आसन, पूंजनी, मुखवस्त्रिका की प्रतिलेखना कर आसन बिछाएं। मुख पर मुखवस्त्रिका बांधे। विराजित साधु-सतियों को वन्दन करें या पूर्व-उत्तर दिशा में 3 बार तिक्खुत्तो के पाठ से गुरुवन्दना करें।
2. खड़े होकर नवकार मंत्र पढें, सम्यक्त्व सूत्र, आलोचना सूत्र और कायोत्सर्ग सूत्र पढ़कर ध्यान (Meditation) में स्थित होवें।
3. एक बार ध्यान में चतुर्विंशति-स्तव सूत्र पढ़ें। एक नवकार पढ़कर ध्यान खोलें।
4. अब पुनः बोलकर चतुर्विंशति-स्तव [लोगस्स] सूत्र पढ़ें।

5. अब प्रतिज्ञा सूत्र पढ़ें और एक सामायिक करनी हो तो मुर्हत। घड़ी 2 (दो सामायिक के लिए मुर्हत 2 घड़ी 4 बोलकर पढ़ें।)
6. फिर नीचे बैठकर बायां घुटना खड़ा कर, दोनों हाथ जोड़कर दो बार शक्रस्तव सूत्र (नमोत्थुणं का पाठ) पढ़ें। दूसरी बार में 'ठाणं संपत्ताणं' के स्थान पर 'ठाणं संपाविउ, कामाणं' बोले और इसके बाद घड़ी में समय देखकर सामायिक की शुरुआत करें।

सामायिक पारने की विधिः

आलोचना सूत्र से शुरुआत कर दो बार नमोत्थुणं तक पढें। प्रतिज्ञा सूत्र नहीं पढना। नमोत्थुणं के बाद समाप्ति सूत्र पढ़ें, फिर तीन बार नवकार मंत्र पढकर सामायिक को पूर्ण करें।

समाप्ति सूत्रः

"नौवें सामायिक व्रत के विषय में, जो कोई अतिचार लगा हो तो आलोऊं। मन, वचन, काया का खोटा योग बरताया हो, सामायिक में समता न की हो, बिना पूगी पारी हो। 10 मन के, 10 वचन के, 12 काया के, इन 32 दोषों में कोई पाप-दोष लगा हो तो तस्स मिच्छामि दुक्कडं।"

सामायिक में स्त्री कथा/पुरुष कथा, भक्त (भोजन) कथा, देश कथा, राज कथा, इन 4 प्रकार की कथाओं से बचना चाहिए और आहारसंज्ञा, भयसंज्ञा, मैथुनसंज्ञा तथा परिग्रहसंज्ञा नामक इन 4 संज्ञाओं का सेवन नहीं करना है।

सामायिक में बैठने की मुद्रा

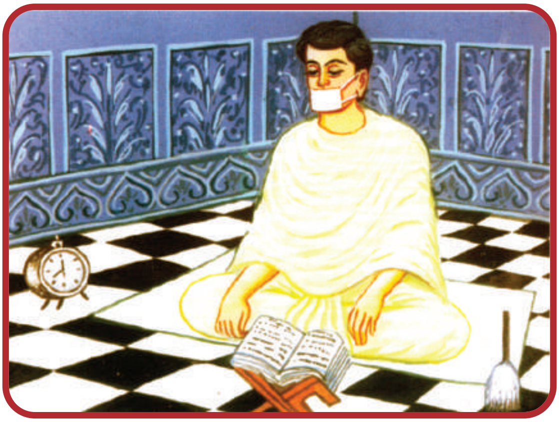

2. सम्यक्त्व सूत्र

अरिहंतो मह देवो, जावज्जीवं सुसाहुणो गुरुणो।
जिणपण्णत्तं तत्तं, इअ सम्मत्तं मए गहियं ॥1॥

पंचिदिय, संवरणो, तह नवविह, बंभचेर, गुत्तिधरो।
चउविह, कसाय, मुक्को, इअ अट्ठारस, गुणेहिं संजुत्तो ॥2॥

पंच, महव्वय, जुत्तो, पंच, विहायार, पालण, समत्थो।
पंच, समिओ तिगुत्तो, छत्तीस, गुणो गुरू मज्झं ॥3॥

इस पाठ में देव, गुरु और धर्म की पहचान के बारे में बताया गया है और किसी साधु में मुख्य रूप से क्या-2 गुण होने चाहिएँ, उनका वर्णन है।

अर्थः

अरिहंतो मह देवो	अरिहंत मेरे देव हैं
जावज्जीवं सुसाहुणो गुरुणो	जीवन पर्यन्त श्रेष्ठ साधु गुरु हैं
जिण, पण्णत्तं तत्तं	जिन भगवान् द्वारा प्ररूपित तत्त्व (धर्म)
इय सम्मत्तं मए गहियं	यह सम्यक्त्व मैंने ग्रहण की है
पंचिदिय-संवरणो	पाँच इन्द्रियों (Senses) को संवर (Control) में करने वाले
तह	तथा इसी प्रकार
नवविह, बंभचेर, गुत्तिधरो	नौ प्रकार की ब्रह्मचर्य की गुप्तियों को धारण करने वाले
चउविह, कसाय, मुक्को	4 प्रकार के कषायों से मुक्त
इय अट्ठारस, गुणेहिं संजुत्तो	इन 18 गुणों से सहित
पंच, महव्वय, जुत्तो	5 महाव्रतों से युक्त

पंच, विहायार, पालण, समत्थो	5 प्रकार का आचार (Conduct) पालने में समर्थ (Competent)
पंच, समिओ तिगुत्तो	5 समिति 3 गुप्ति से युक्त
छत्तीस, गुणो गुरू मज्झं	36 गुणों वाले मेरे गुरु हैं (5+9+4+5+5+5+3=36)

गुरु के गुण

9 प्रकार से ब्रह्मचर्य पालक

5 महाव्रत

(अहिंसा, सत्य, अचौर्य, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह)

5 समिति 3 गुप्ति

1 ईर्या समिति
2 भाषा समिति
3 एषणा समिति
4 आदान-निक्षेप समिति
5 उच्चार पासवण समिति
1 मन गुप्ति
2 वचन गुप्ति
3 काय गुप्ति

5 इन्द्रियों को वश में करने वाले

(स्पर्शेन्द्रिय, रसनेन्द्रिय, घ्राणेन्द्रिय, चक्षुः इन्द्रिय, श्रोत्रेन्द्रिय)

4 कषाय को जीतने वाले

(क्रोध, मान, माया, लोभ)

5 आचार का पालन करने वाले

(ज्ञानाचार, दर्शनाचार, चारित्राचार, तपाचार, वीर्याचार)

जैन साधु, ऊपर लिखित 36 गुणों के धारक होते हैं। 5 समिति, 3 गुप्ति को अष्ट प्रवचन, माता भी कहते हैं। हमें किसी भी साधु-साध्वी में इन 36 गुणों के आधार पर ही श्रद्धा करनी चाहिए।

3. 18 पापों के नाम

जैन धर्म के अनुसार, वैसे तो अनेक प्रकार के पाप होते हैं परन्तु फिर भी उनको संक्षिप्त रूप में 18 प्रकार से बताया जा सकता है, जो कि निम्नलिखित हैं:–

1.	हिंसा	Violence
2.	झूठ	Lie (Falsehood)
3.	चोरी	Stealing
4.	अब्रह्मचर्य	Non-Celibacy
5.	परिग्रह	Possession
6.	क्रोध	Anger
7.	मान (अहंकार)	Proud (Arrogant)
8.	माया (कपट)	Deceit (Deceptive)
9.	लोभ (लालच)	Greed
10.	राग	Attachment
11.	द्वेष	Hate
12.	कलह	Quarrel
13.	अभ्याख्यान(झूठा कंलक)	False Accusations
14.	पैशुन्य (चुगली)	Backbiting
15.	पर परिवाद (निन्दा)	Condemning others
16.	रति-अरति	Passionate-Dispassionate
17.	माया मृषावाद	Spreading Rumors or Scandals
18.	मिथ्यादर्शन शल्य	Believing in False Doctrines

एक सच्चे जैन गृहस्थ/श्रावक को ऊपर लिखित पापों से बचने का हर सम्भव प्रयास रखना चाहिए। तब ही हम भ. महावीर के सच्चे सिपाही कहलाएंगे।

4. जैन धर्म के तीन सिद्धान्त
THREE SIGNALS

1
अहिंसा
जीओ और जीने दो ।

1. मांसाहार का त्याग करें।
(Say no to Non-veg food)

2. छोटे-छोटे जीवों की रक्षा करें।
(Protect tiny creatures)

3. किसी से नफरत न करें।
(Don't hate anybody)

2
अनेकान्तवाद

Truth is multi-directional.

1. अपने विचार रखें, निर्णायक न बनें।
(Give opinions, don't be Judgemental)

2. 'मैं ही सही हूँ' ऐसा न सोचें,
ये सोचें- दूसरा भी सही हो सकता है।
(Don't think- 'Only i am Right'
Think- 'The other may also be Right')

3. सच्चाई व समाधान के विभिन्न तरीकों को खोजें।
(Search the different ways of truth & solution)

27
÷
3
=
11 − 2 = **9** = 3 x 3
=
4
+
5

As one digit 9 can be a combination of different digits, similarly, truth can be a combination of different situations.

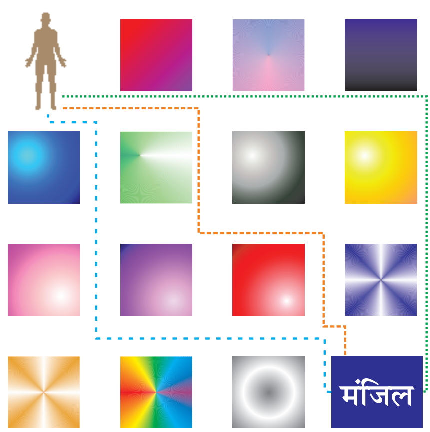

As one destination has different routes, in the same way, one situation has different aspects of truth.

3
अपरिग्रह
संतोषी सदा सुखी ।

1. जो है, उसका आनंद लें और दूसरों के साथ बाँटें।
(Enjoy & Share - what you have)

2. आवश्यकता से अधिक न रखें।
(Don’t possess more than necessity)

3. दूसरों की चीजों पर मत ललचाएँ।
(Don't be tempted towards others’ belongings)

BENEFITS

- Less Competition
- Less Conflict
- Less Crime
- Less Tension
- Less Wastages
- No Superiority Complex
- Social Equality
- Social Welfare

5. इन्द्रिय पाँच – Doraemon की Pocket में क्या है?

Nobita का बचपन में Accident हो गया। वह बहुत दिनों तक बेहोशी की हालत में रहा। उसकी ऐसी हालत देखकर Doraemon को उस पर दया आ गई। उसने अपनी Pocket से एक जड़ी-बूटी निकालकर, उसका रस Nobita पर छिड़का।

उससे Nobita होश में आ गया। वह रोते-रोते बोला– 'मैं जीकर क्या करूँगा? मेरा सारा शरीर खराब हो चुका है।' Doraemon– 'तुम चिंता मत करो, मैं तुम्हारी मदद करूँगा।' उसने Pocket से एक Gadget निकाला और Nobita को देते हुए कहा– 'इससे तुम्हारी Feeling Power वापिस आ जाएगी।' ऐसा ही हुआ।

Nobita Doraemon को छू कर बोला– 'ओह! तुम्हारे पाँव कितने गरम हैं। पेट बहुत Soft है और माथा तो बिल्कुल ठंडा है।'

Doraemon बोला– 'ये है बहुत पुराना फंडा, पैर गरम पेट नरम सिर ठंडा, बीमारी आए तो दिखाओ डंडा, हा-हा-हा..........।' हँसते-हँसते Doraemon ने उसे एक और Gadget दिया, जिसमें Taste करने की Power थी। साथ में खाने को Chocolate भी दी।

Nobita– 'कितनी Yummy है ये, मज़ा आ गया।' तभी Doraemon को शरारत सूझी। उसने उसे पीने के लिए खारा Soda दे दिया।

एक घूँट पीते ही Nobita थू-थू करने लगा– 'छी! कितना कड़वा है ये।' Doraemon ने ज़ोर से ठहाका लगाया।

Doraemon Nobita को घुमाने Garden में ले गया। वहाँ सूंघने की Power वाला Gadget देते हुए बोला– 'लो, इसे संभालो।' फूलों की खुशबू से Nobita झूमने लगा। इसी मस्ती में उसने एक फूल तोड़ लिया।

इस से Doraemon नाराज़ हो गया। उसने उस Gadget को गायब कर दिया और कहा– 'क्या ये Power इसलिए दी थी कि किसी फूल का जीवन नष्ट कर दो?' Nobita को अपनी गल्ती का अहसास हुआ। उसने Sorry कहा तो Doraemon ने वो Gadget वापिस कर दिया।

वे दोनों कश्मीर घूमने गए। वहाँ Doraemon ने Nobita को देखने की Power वाला Gadget दिया। वहाँ का सुंदर नज़ारा देखकर Nobita खुशी से चिल्लाया– देखो Doraemon! नीला-नीला आकाश, हरे-भरे बाग, वो झरने, वो झील।'

Nobita ने सोचा कि वह जो भी माँगता है, Doraemon Pocket से निकालकर दे देता है। उसके मन में वह Pocket देखने का लालच आ गया। उसने Pocket में झाँकने की कोशिश की, तो Doraemon ने Gadget की Power खत्म कर दी। Nobita को दिखना बंद हो गया।

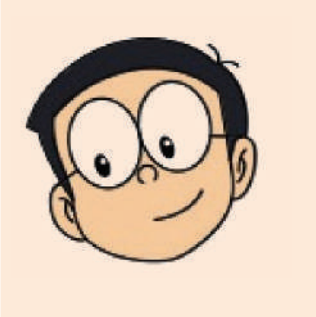

वह बोला– 'आखिरी बार मुझे माफ कर दो, Please. Doraemon– 'कब तक माफ करूँ तुम्हें?' Nobita ने रो-रो कर आँसुओं से तालाब भर दिया, तब जाकर Doraemon से उसे Power वापिस मिली।

Nobita ने Doraemon को खुश करके एक सुनने की Power वाला Gadget भी हासिल कर लिया। पक्षियों की चहक सुनकर वह भी गुनगुनाने लगा। उसे लगा कि उसकी Life में अब कोई कमी नहीं रही। आँखों में खुशी के आँसू भरकर वह बोला– 'Thank You, Doraemon!'

Doraemon– 'ये पाँचों Gadgets जीव को 5 Senses (इंद्रियाँ) के रूप में मिलते हैं। इनकी Help से जीव ज्ञान प्राप्त करता है। इनके नाम हैंः–

1. स्पर्श इन्द्रिय (Skin) 2. रसना इन्द्रिय (Tongue) 3. घ्राण इन्द्रिय (Nose) 4. चक्षु इन्द्रिय (Eyes) 5. श्रोत्र इन्द्रिय (Ears)'

Doraemon– 'Nobita, ये पाँचों Senses बहुत Precious हैं। इन का Proper Use करना तुम्हारे लिए बहुत बड़ा Challenge है। तुम पहले दो बार गल्ती कर

चुके हो। ध्यान रखना, बार-बार की गल्ती से ये Gadgets Fuse हो जाएँगे।'

Nobita– 'मैं Promise करता हूँ– आगे से गल्ती नहीं करूँगा।'

Doraemon– 'Best of Luck And Take Care.'

□□□

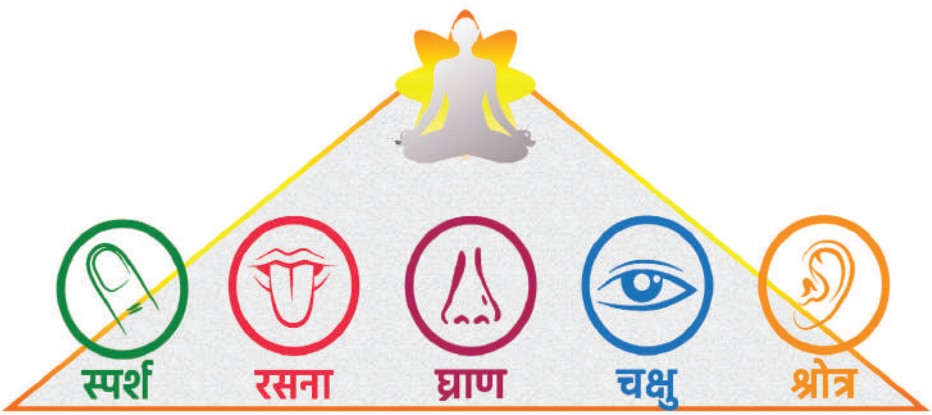

★★★★★ चौथा बोल – इन्द्रिय पाँच ★★★★★

6. पर्याप्ति छः– My Dream Home

Candy बहुत Innovative लड़की थी। वह घर को सजाने के नए-नए तरीके ढूँढती रहती थी। एक दिन उसने एक सपना देखा– 'एक सेठ के घर में बेटे का जन्म हुआ। सेठ ने सोचा कि बच्चे के लिए एक Baby Home बनवाना चाहिए। उसने Engineers को बुलाकर एक Different, प्यारा सा घर बनाने को कहा।'

Candy ने देखा कि पलक झपकते ही घर बनाने का सामान इकट्ठा हो गया। Workers ने झटपट Pillars, दीवारें व छत तैयार कर दी। Pillars के नीचे छोटे-छोटे पहिये लगाए, जिससे वह घर Portable बन गया।

एक Special Team ने आकर घर में C.C.T.V. कैमरे लगाए, जिससे बाहर की सभी Activities को जाना जा सके। तभी सेठ जी ने देखा कि घर की दीवारों में छोटे-छोटे Hole किए जा रहे हैं।

उसने Engineer से पूछा– 'ये Hole किसलिए?'

Engineer ने कहा– 'Sir! इन Holes से शुद्ध वायु घर के अंदर जाएगी और अंदर की अशुद्ध वायु बाहर आएगी। इस Process के लिए हमने घर के अंदर एक System भी लगा दिया है।' देखते-देखते खिलौने जैसा घर तैयार हो गया।

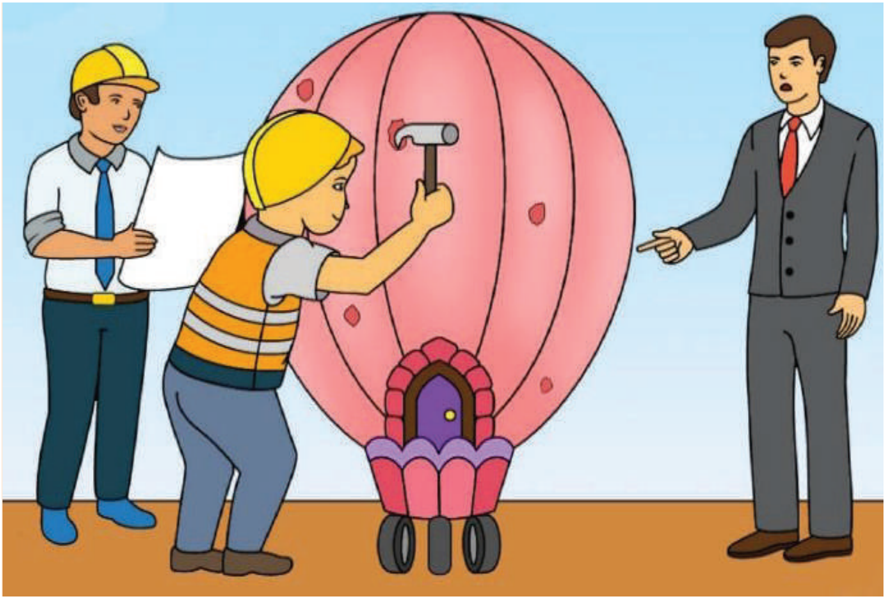

सेठ जी बोले– 'ये बहुत छोटा है। जैसे ही बच्चा बड़ा होगा, ये बेकार हो जाएगा।'

Engineer– 'सेठ जी! ये बहुत Different घर है। जैसे-जैसे बच्चा बड़ा होगा, घर Balloon की तरह फूलता चला जाएगा। ये आज की Latest Technology है। Technologies तो हमारे पास और भी हैं, पर वे बहुत महंगी हैं।'

सेठ– 'तुम पैसे की चिंता मत करो। जो कर सकते हो, करो।'

कारीगरों ने वहाँ एक Sound-System Fit कर दिया। उन्होंने बताया कि यह System बाहर की Sound-Waves को Catch करेगा व उन्हें मनचाही आवाज़ के रूप में बाहर छोड़ सकेगा। सेठ जी 'बल्ले-बल्ले' करने लगे।

इसके बाद एक अनोखा Sensor System पूरे घर में लगाया गया, जो

Environment में फैली हर तरह की (अच्छी व बुरी) Vibrations की Processing करके उन्हें Positive Vibrations में Convert कर सकेगा। सेठ जी के मुँह से निकला 'Wonderful!'

सपने में यह सब देखकर Candy ज़ोर से चिल्लाई– 'Yes! This Is My Dream Home.' उसकी तेज़ आवाज़ सुनकर सब घरवाले जाग गए। Candy ने अपने सपने के बारे में सब को बताया।

वह बोली– 'मम्मा! मुझे वैसा ही घर चाहिए।'

मम्मा– 'वो घर तो Already तुम्हारे पास है।'

Candy– 'वो कैसे?'

मम्मा– 'देखो, जब जीव का जन्म होता है, तो सबसे पहले शरीर बनाने के लिए वह आहार-सामग्री ग्रहण करता है, इसे आहार पर्याप्ति कहते हैं। उस आहार रूपी Material से Body का Structure तैयार होता है, जिसे शरीर पर्याप्ति कहते हैं।'

Candy– 'फिर क्या होता है?'

मम्मा– 'फिर इंद्रिय पर्याप्ति यानि C.C.T.V. जैसी इंद्रियों (Senses) का निर्माण होता है। इसके बाद शुद्ध वायु (Oxygen) लेने के लिए Respiratory System की रचना होती है, इसे श्वासोच्छ्वास पर्याप्ति कहते हैं।'

मम्मा– 'फिर Vocal Cords (स्वर तंत्र) के रूप में Sound System बनता है। इससे जीव में बोलने की ताकत आ जाती है, यह भाषा पर्याप्ति कहलाती है। सबसे Last में सोचने की ताकत वाला Brain व Neuro-System तैयार होता है, इसे मनः पर्याप्ति कहते हैं। यह तुम्हारे Dream Home के Sensor System जैसा है, जिससे जीव Positive सोच सकता है।'

मम्मा— 'अब बताओ, तुम्हारे पास, Infact हम सबके पास वो घर है ना!'

Candy— 'Yes Mamma! We all are so Lucky. पर एक बात बताना तो मैं भूल ही गई। Engineer ने सेठ जी से कहा था कि इन Devices की बहुत Care रखनी होगी, नहीं तो ये Damage हो जाएँगे।'

मम्मा— 'Yes, हमें सही खान-पान, Yoga व Meditation के through इनकी Care करनी होगी, so that they work properly.'

Candy— 'I will try my best, Mamma.'

□□□

★★★★★ पाँचवां बोल – पर्याप्ति छः ★★★★★

7. प्राण दस – मेरे बेटे को बचा लीजिये

स्वामी गजानन्द पहुँचे हुए योगी थे। एक बार उन्होंने U.S.A. में जाकर योग-शिविर लगाया। योग सीखने वालों की संख्या प्रतिदिन बढ़ने लगी। एक दिन एक परिवार अपने 16 साल के बेटे Sandy को लेकर स्वामी जी के पास आया।

Sandy को पूरा होश भी नहीं था। उसके पापा ने बताया– 'ये हमारा इकलौता बेटा है। छोटी उम्र से ही इसने Smoking और Drinking करना शुरू कर दिया। हमने सोचा कि हम भी ऐसा करते हैं, तो इसे भी अपना शौक पूरा करने दें। पर धीरे-धीरे इसकी Condition बिगड़ती चली गई।'

स्वामी जी– 'फिर क्या हुआ?' पापा– 'यह चोरी-छिपे Drugs लेने लगा, जिससे इसकी भूख खत्म हो गई। कुछ भी खाने को देते तो कहता– 'मुझे भूख नहीं है।' अब इसे साँस लेने में भी Problem है।'

स्वामी जी– 'ये करता क्या है?'

पापा– 'कुछ नहीं। सारा दिन अपने Room में बेहोश-सा पड़ा रहता है। जब कुछ होश आता है तो नशा करके फिर वैसा हो जाता है। इसे सर्दी-गर्मी का भी अहसास नहीं रहता। ढंग से आवाज़ भी नहीं निकलती। कभी-कभी दो-चार डरावने शब्द बोलता है– 'मैं हार चुका हूँ, मुझे मर जाने दो।'

Sandy की मम्मी ने रोते हुए कहा– 'स्वामी जी! हमें डर लगता है कि कहीं ये Suicide न कर ले।' स्वामी जी ने देखा कि Sandy का शरीर सूख चुका है। उसकी Pulse feel करते हुए स्वामी जी बोले– 'इसे संभालना बहुत मुश्किल है,

क्योंकि इसके Liver, Kidney आदि Organs बहुत ज़्यादा Damage हो चुके हैं।'

Sandy की मम्मी– 'इसे संभालना Difficult है, Impossible तो नहीं!'

स्वामी जी– 'इसके Treatment के लिए कम से कम एक साल लगेगा और आपको भी New Born Baby की तरह इसकी Care करनी होगी।'

मम्मी– 'हम सब कुछ करने को तैयार हैं, आप Plzzz... मेरे बेटे को बचा लीजिए।'

स्वामी जी– 'सुनिए। हमारे ग्रन्थों में 10 तरह के प्राण (Power) बताए गए हैं–

1. आयुष्य बलप्राण– Life Retaining Power. 10 प्राणों में यह सबसे मुख्य है। Sandy इसी प्राण के सहारे जी रहा है।
2. श्वासोच्छ्वास बलप्राण– शरीर की Breathing Power.
3. काय बलप्राण– शरीर की Working Power.
4. वचन बलप्राण– जीव की Speaking Power.
5. मन बलप्राण– जीव की Thinking Power.
6-10. इंद्रिय बलप्राण– पाँचों Senses की जो Working Power है, वह पाँच प्रकार का इंद्रिय बलप्राण है।'

स्वामी जी– 'आयुष्य को छोड़कर Sandy के बाकी प्राण Disturb हो चुके हैं। अगर उन्हें संभाला नहीं गया तो आयुष्य भी ज़्यादा देर टिक नहीं पाएगा। इसे ठीक करने का एक ही उपाय है– Operation 'कायाकल्प'।'

Sandy के पापा ने पूछा– 'इसमें क्या करना होगा?'

स्वामी जी– 'नए सिरे से इसके शरीर में ताकत डाली जाएगी। सबसे पहले इसके आसपास से नशे की सब चीज़ें दूर कर दो। इस Process में यह नशे के लिए तड़पेगा, सिर भी पटकेगा। आपको बस इसे चोट लगने से बचाना है।'

Sandy के पापा– 'हम तैयार हैं।'

Operation शुरू हो गया। स्वामी जी ने जो कहा था, वही हुआ। कुछ समय बाद, नया नशा नहीं मिलने से वह होश में आने लगा, कुछ-कुछ भूख भी लगी। उसे थोड़ा-थोड़ा खाने के लिए दिया जाने लगा। साथ में चूर्ण भी दिया, जिससे वो Digest हो सके। इससे शरीर में Energy आनी शुरू हो गई।

फिर स्वामी जी ने खुले वातावरण में Sandy को प्राणायाम शुरू करवाया। अनुलोम-विलोम आदि करने से साँस की परेशानी दूर हो गई। धीरे-धीरे Sandy को Healthy Diet पर लाया गया, इससे उसकी Senses की Power Recover हो गई।

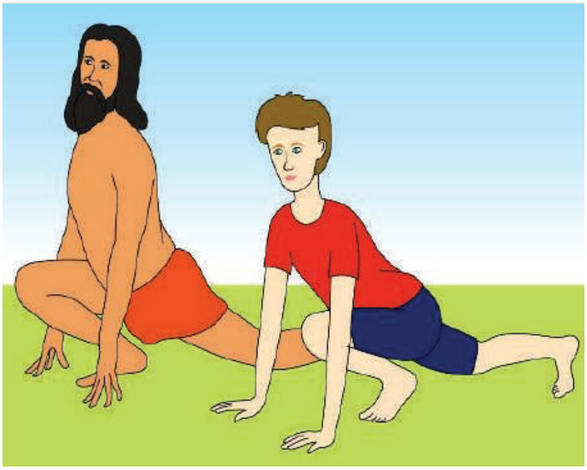

Speech Therapy लेने से वह अच्छे से बोलने लगा।

एक Psychiatrist ने उसे Depression से बाहर निकालने में बहुत Help की। Sandy बिल्कुल स्वस्थ हो गया।

स्वामी जी ने Sandy से पूछा– 'अब भी मरना चाहते हो?'

Sandy– 'नहीं स्वामी जी। आपने मुझे नई ज़िंदगी दी है। मैं अपने Friends को भी नशे की Unconscious Life से निकालकर Healthy Life में लाने की कोशिश करूँगा।' Sandy व उसके Parents से भावपूर्ण विदाई लेकर स्वामी जी India में वापिस लौट आए।

□□□

★★★★★ छठा बोल – प्राण दस ★★★★★

8. शरीर पाँच – गड्डी जांदी है छलांगा मार दी

Addy को नई-नई गाड़ियों के बारे में जानने का बहुत शौक था। उसके एक दोस्त ने बताया कि तीन कंपनियाँ सारी दुनिया पर राज करना चाहती हैं और वे सब जगह अपनी गाड़ियाँ पहुँचा रही हैं। Addy ने तीनों के नाम नोट कर लिए– Audari (Auda), Vakaari (V) व Aahari (Aaha).

Addy ने Audari की Website खोली। उसने देखा कि चींटी से लेकर हाथी तक, यानि छोटे-बड़े सब जीवों के लिए इस Company के पास वाहन उपलब्ध

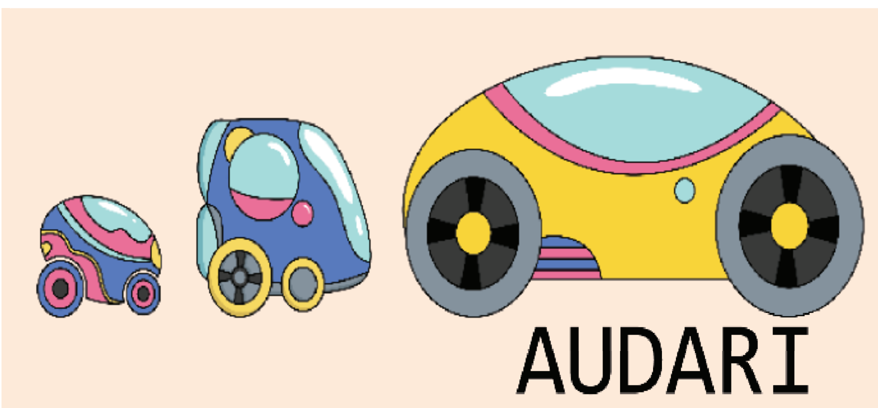

थे। Variety का तो अंत ही नहीं था। Unlimited Shades वाले, Petrol, Diesel, Gas व Electricity से चलने वाले, Single-Wheeler, Multi-Wheeler, महंगे-सस्ते हर तरह के वाहन थे।

Vakaari की Website पर लिखा था– Buy Me, If You Can! इस

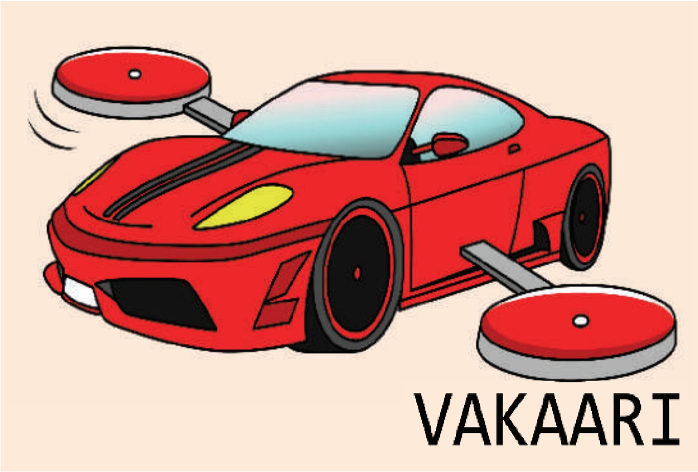

Company की गाड़ियाँ Magic से कम नहीं थी। इनमें न Fuel डालने का झंझट था, न टूट-फूट का डर। Life-Time ये ज्यों की त्यों रहेंगी। Remote का बटन दबाओ और मनचाहा Size, Shape व Color पाओ। इन्हें ज़मीन पर, पानी पर, आकाश में– जहाँ चाहे, वहाँ चलाया जा सकता था।

Addy ने देखा कि इसकी Customer's List में Aliens ही Aliens हैं, क्योंकि वे ही इतनी महंगी गाड़ियाँ Afford कर सकते थे। अच्छे-अच्छे Model बिक चुके थे। जो थोड़े-बहुत बचे थे, उनके लिए कुछ धरतीवासियों ने Apply कर दिया। Company के पास जो Rejected व Defective माल था, वो Hell के जीवों को सस्ते दामों में बेचा जा रहा था।

Aahari Co. की गाड़ियाँ बिल्कुल अलग थी। ये Rocket की तरह उड़कर दूसरे Planets की सैर करवा सकती थी। पर इन्हें Operate करना किसी Challenge से कम नहीं था। Atomic Energy की 14 Super Techniques को जानने वाला ही इन्हें Handle कर सकता था। Company ने ऐसी Unique Personalities को Promote करने के लिए ये गाड़ियाँ बनाई थी।

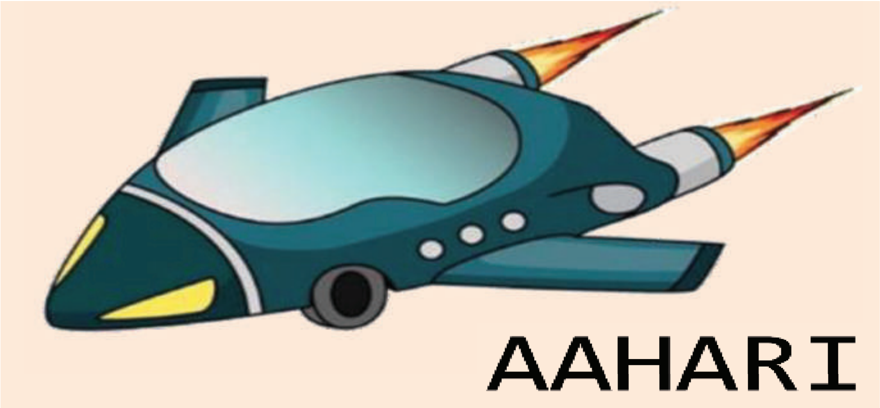

Addy ने अपने पापा को इन गाड़ियों के बारे में बताते हुए कहा– 'पापा! देखा आपने, आज की Technology का कमाल।'

पापा– 'बेटा! Nature (कुदरत) का कमाल इससे भी बढ़कर है। उसने सब जीवों को जीवन की यात्रा करने के लिए गाड़ियाँ दी हैं, जिन्हें हम शरीर कहते हैं।' Addy– 'शरीर?'

पापा– 'हाँ, शरीर! 3 Macro व 2 Micro– कुल 5 शरीर होते हैं।'

Addy– 'मुझे इनके बारे में जानना है, आप मुझे बताइए।'

पापा– 'सबसे पहले औदारिक शरीर (Audarik) है। Auda गाड़ियों की तरह इसकी बहुत Varieties हैं। Plants से लेकर Animals तक एवं सभी मनुष्यों के पास यह शरीर होता है। इसकी रचना Blood, Bones, Flesh आदि से होती है।'

पापा– 'दूसरा वैक्रिय शरीर (Vaikriya) Invisible Powers से बना होता है। इसके Features Vakaari गाड़ियों की तरह Magical हैं। Fine Quality वाला वैक्रिय शरीर देवताओं को मिलता है व Low Quality वाला नरक के जीवों को।'

पापा– 'तीसरा आहारक शरीर (Aaharak) है। इसे केवल वे संत-महात्मा बना

सकते हैं, जिन्हें 14 पूर्व (Super Knowledge) का ज्ञान होता है। वे अपने ज्ञान और Nature की Unique Powers की सहायता से ऐसा शरीर बनाकर भगवान् के पास जा सकते हैं व उनसे बातें कर सकते हैं।'

पापा– 'इन तीनों तरह के शरीरों में दो तरह के Micro शरीर छुपे हुए होते हैं– तैजस शरीर व कार्मण शरीर। तैजस शरीर Engine की तरह पहले तीनों शरीरों में Heat Generate करता है व उनका Temperature Maintain रखता है। कार्मण शरीर Meter की तरह जीव के कर्मों की Recording रखता है। इसकी Report के आधार पर जीव को नया शरीर, यानि नई गाड़ी मिलती है।'

Addy– 'पापा! आपकी Knowledge ने तो मेरी आँखें खोल दी।'

पापा– 'अब तुम्हें सोचना है कि तुम औदारिक शरीर की गाड़ी कैसे चलाओगे!'

Addy– 'मैं Report Card में Excellent लाकर दिखाऊँगा।'

□□□

★★★★★ सातवां बोल – शरीर पाँच ★★★★★

9. कर्म आठ – समोसा

मोटू-पतलू की जोड़ी में मोटू Powerful व पतलू Intelligent था। मोटू की एक ही कमज़ोरी थी– समोसा। बिना समोसा खाए वो कुछ भी नहीं कर सकता था, इसलिए पतलू एक Box में दो-तीन समोसे हमेशा तैयार रखता था। ये जोड़ी उस इलाके के बदनाम चोर John को कई बार मज़ा चखा चुकी थी।

एक बार John ने पतलू को Kidnap करने की योजना बनाई। उसने डा. झटका की Lab से दो चीज़ें चुरा ली– एक नींद लाने वाला Spray, दूसरा बुद्धि को भ्रष्ट करने वाला Powder। Kidnapping के लिए उसने छुट्टी का दिन चुना, जिससे मोटू को समोसा न मिल सके।

John व उसके दो चेले 'John बनेगा Don'– की आवाज़ें लगाते हुए मोटू-पतलू के पास पहुँच गए। पतलू ने धीरे से कहा– 'मोटू, मुझे कुछ गड़बड़ लगती है।'

मोटू– 'इसने कुछ किया तो छोड़ूँगा नहीं।' इतने में John ने एकदम दोनों पर Spray छिड़क दिया, जिससे उन्हें नींद आ गई।

John बोला– 'चेलो! जल्दी से समोसे वाला Box ढूँढो।' Box मिल गया। उसमें तीन समोसे थे, तीनों ने एक-एक खा लिया। पतलू को रस्सियों से बांध लिया गया। Spray का असर कम होने पर दोनों की नींद खुली।

पतलू चिल्लाया– 'मोटू, मुझे बचाओ, मुझसे ये रस्सियाँ सहन नहीं हो रही।'

मोटू– 'तुम्हें तो पता है कि खाली पेट मेरे दिमाग की बत्ती नहीं जलती। बताओ, समोसा कहाँ है?' पतलू– 'Box में।'

John ने खाली Box दिखाते हुए कहा– 'इसमें! ही-ही-ही.... ।'

पतलू– 'मोटू, तुम्हारी ताकत का क्या फायदा है, जो चुपचाप सब देख रहे हो।'

मोटू– 'मैं मज़बूर हूँ, मुझे पहले समोसा चाहिए।' तभी John ने गन्ने के रस में Powder मिलाकर पतलू को ज़बरदस्ती वो रस पिला दिया। इससे पतलू की बुद्धि भ्रष्ट हो गई।

वह बोला– 'दोस्त जॉन, इस मोटू को इतना पीटो कि इसका पेट फट जाए।' मोटू सोच में पड़ गया। इतनी देर में John पतलू को लेकर कहीं दूर चला गया। अगले दिन मोटू को समोसा मिला। उसने Inspector चिंगम को कहा– 'Sir, आप कुछ करो!'

चिंगम– 'अभी मैं डोसा खाता जी।' मोटू– 'पहले मेरे दोस्त को ढूँढो।' चिंगम ने खोज करके बताया कि पतलू को मंदिर के पीछे छुपाया हुआ है।

मोटू ने डा. झटका से अपने नाखून में ऐसा Chemical डलवा लिया, जिससे वो किसी भी चीज़ को छूकर उसे समोसा बना सके। सारी तैयारी करके वह मंदिर के पास पहुँचा। वहाँ John के दोनों चेले पहरा दे रहे थे। मोटू ने दोनों की धुनाई की और मंदिर के पीछे पहुँच गया।

John को मालूम था कि मोटू की ताकत समोसे पर टिकी है, इसलिए उसने मज़ाक करते हुए कहा– 'लो, Cake खा लो।' मोटू ने Cake को नाखून से छूकर समोसा बना दिया। पतलू– 'वाह, मोटू! वाह!'

John चिल्लाया– 'हाय! ये क्या हुआ? अब मैं मरा, कोई मुझे बचाओ!' John की खूब पिटाई हुई।

पतलू– 'गलत काम करते हुए बड़े उछल रहे थे। याद रखो, कर्म का फल भुगतना ही पड़ता है।' मोटू– 'ये कर्म क्या होते हैं?'

पतलू– 'हम जो भी काम करते हैं या सोचते हैं, उसके संस्कार कर्म बनकर हमसे Attach हो जाते हैं, और फिर धीरे-धीरे अपना असर दिखाते हैं।'

मोटू– 'मुझे इन्हें समझना है।' पतलू– 'कर्म के 8 भेद हैं। इनमें से 4 कर्म Soul पर व 4 कर्म Body पर Effect डालते हैं।'

मोटू– 'Soul पर Effect डालने वाले कर्म कौन से हैं?'

पतलू– 'Soul में Infinite Power है, पर अंतराय कर्म इस Power को रोकता है। इस कर्म की वजह से ही मैं कमज़ोर हूँ। दूसरा ज्ञानावरणीय कर्म जीव को अज्ञानी बनाता है। यह कर्म तुम पर ज़्यादा हावी है।'

मोटू– 'तभी तो शरीर की तरह मेरी बुद्धि भी मोटी है।'

पतलू– 'तीसरा दर्शनावरणीय कर्म Spray की तरह है। यह जीव की Consciousness (चेतना) को रोककर उसे सुला देता है। चौथा मोहनीय कर्म Powder की तरह जीव को मोहित कर देता है, जिससे जीव गलत Decision लेता है व गलत राह पर चलता है।'

मोटू– 'अब मैं समझा, तुम Juice पीने के बाद मुझे क्यों पिटवा रहे थे। अच्छा, बाकी 4 कर्म कौन से हैं?'

पतलू– 'उन चार कर्मों में एक नाम कर्म है। एडी से चोटी तक पूरे शरीर की रचना इसी कर्म से होती है। वेदनीय कर्म से Body की Tolerance Power तैयार होती है, उससे फिर सुख-दुख का अनुभव होता है।'

मोटू– 'जैसे तुम रस्सियों से परेशान हो गए थे!'

पतलू– 'जी हाँ! अगला गोत्र कर्म है। इसके प्रभाव से जीव अपने पूर्वजों से Healthy-Unhealthy Genes को Inherit करता है, जिनसे उसकी अच्छी-बुरी Reputation बनती है। जैसे John ने पूर्वजों से चोरी के संस्कार लिए तो वह बदनामी का जीवन जी रहा है। Last आयुष्य कर्म है, यह हमारी Age को Determine करता है।'

मोटू– 'जीव ज़्यादा Powerful है या कर्म!'

पतलू– 'जीव! पर तब, जब उसे आत्म-विश्वास का समोसा मिल जाता है।'

मोटू– 'समोसा! मेरे मुँह में पानी आ रहा है। John के बच्चे! ला एक समोसा!'

□□□

★★★★★ दसवां बोल – कर्म आठ ★★★★★

10. भगवान् पार्श्वनाथ का जीवन परिचय

भगवान् पार्श्वनाथ जैन शासन के **23वें तीर्थंकर** थे। उनका जन्म **ईसा पूर्व** 877 में वाराणसी में हुआ। उनके पिता का नाम अश्वसेन व माता का नाम वामा देवी था। **कुशी नगर** के राजा प्रसेनजित् की कन्या **प्रभावती** से उनका विवाह हुआ। ईसा पूर्व नौवी शताब्दी के लगभग भारतवर्ष के कोन-कोने में हठयोग का बोलबाला था। धर्म के नाम पर दंभ की गहरी छाप लग चुकी थी। लोग वास्तविक धर्म को छोड़कर बाहरी दिखावे में बह चुके थे। उन्हीं दिनों की बात है, वाराणसी नगरी (बनारस) के बाहर बगीचे में एक साधु यज्ञ कर रहा था। राजकुमार पार्श्वनाथ भी टहलते हुए वहाँ आ पहुँचे। वहाँ पर उस विशाल यज्ञ के दर्शनार्थ काफी भीड़ जमा हो रही थी। राजकुमार ने अपने विशिष्ट ज्ञान (अवधि ज्ञान) से देखा कि धांय-धांय जलते हुए लक्कड़ों में से एक लक्कड़ की पोल में साँप का एक जोड़ा (युगल) तिलमिला रहा है। राजकुमार ने जनता और उस तपस्वी को सावधान करते हुए कहा, 'ऐसी अज्ञान-क्रिया को तिलांजलि दे दो। भला, यह भी कोई धर्म-क्रिया है, जिसमें साँप जल रहे हों?' यह सुनते ही वह साधु चौंका और राजकुमार की बात पर बिगड़ गया। राजकुमार के आदेश से सेवकों ने उस लक्कड़ को फाड़ा, तो उसमें झुलसा हुआ साँप का जोड़ा निकला। राजकुमार ने सर्प-सर्पिणी को नमस्कार मन्त्र सुनाया और समभाव रखने का उपदेश दिया। उन्होंने राजकुमार के उपदेश को शिरोधार्य कर पूर्ण शान्ति व समता से प्राणों को त्याग दिया। दोनों मरकर **धरणेन्द्र और पद्मावती** नामक देव व देवी बने। सारे लोग राजकुमार की प्रशंसा करते हुए अपने घर लौट आए। साधु मन ही मन राजकुमार पर कुढ़ा, पर उसकी एक भी नहीं चली। लोगों की भी इस तरह के अज्ञानपूर्ण क्रिया-काण्डों से आस्था हट गई। वह साधु अपनी आयु पूर्ण करके **'कमठ'** नामक देवता बना। कुछ समय बाद 30 वर्ष की आयु में राजकुमार ने अपने पिता और माता की अनुमति पाकर दीक्षा ग्रहण की।

एक बार वे अहिच्छत्र वन में ध्यानस्थ खड़े थे। उधर से पूर्व जन्म का द्वेषी वही 'कमठ' देव जा रहा था। इन्हें देखते ही उसका वैर जागृत हो गया। उसने ध्यानस्थ

भगवान् को अनेक उपसर्ग (कष्ट) दिए। उन पर ओलों की वर्षा की, परन्तु वे ध्यान से विचलित नहीं हुए। तब उसने क्रोध में आकर मुसलाधार वर्षा की, परन्तु वे फिर भी ध्यान से विचलित नहीं हुए। आकाश में दिल दहलाने वाली मेघ-गर्जना होने लगी। कुछ ही क्षणों में चारों ओर पानी ही पानी हो गया। भगवान् पार्श्व पानी में डूबने लगे। पानी गले तक आ गया। उधर नाग-नागिन धरणेन्द्र-पद्मावती ने अवधि ज्ञान से देखा कि हमारे उपकारी भगवान् पार्श्व को कोई दुष्ट देव उपसर्ग दे रहा है। तत्काल दोनों नीचे आये और उन पर सर्प-फण की छाया करके उनका उपसर्ग शांत किया। **कुल 83 दिन** की कठोर साधना के उपरांत प्रभु पार्श्व को केवल ज्ञान प्राप्त हुआ। लगभग **70 वर्ष** तक प्रभु ने जन-कल्याणार्थ विहार और धर्म-प्रचार किया। उनके धर्म-संघ में **16,000 साधु, 38,000 साध्वियाँ, 1,64,000 श्रावक तथा 3,27,000 श्राविकाएँ थी।** पूर्ण 100 वर्ष की आयु में उनका निर्वाण हुआ। उनकी स्तुति में अनेकों मन्त्र तथा चमत्कारी स्तोत्र रचे गए, जिनमें 'कल्याण मन्दिर' व 'उपसर्ग-हर-स्तोत्र' अति प्रसिद्ध हैं। सब प्रकार की चिंताओं का हरण करने के कारण प्रभु पार्श्व को 'चिंतामणि पार्श्वनाथ' भी कहा जाता है।

11. भ. महावीर के 11 गणधर

24वें तीर्थंकर श्रमण भगवान् महावीर स्वामी जी के कुल 14,000 शिष्य थे। उनकी सर्वविध आचार-व्यवस्था संभालने वाले 11 प्रमुख सन्त 'गणधर' कहलाते थे। महावीर प्रभु को वैशाख सुदी दसवीं को केवल ज्ञान हुआ। अगले दिन एकादशी तिथि को मध्यमपावा नगरी में समवसरण की रचना हुई। ये सभी विद्वान उस नगरी में सोमिल ब्राह्मण के यज्ञ में आमन्त्रित थे। सभी अपूर्व मेधा, प्रज्ञा और शास्त्र-ज्ञान के भण्डार थे। भगवान् महावीर की दिव्य ऋद्धि से आकर्षित होकर यज्ञ-मण्डप छोड़कर उनके श्रीचरणों में पहुँचे और दीक्षित हुए। उस समय इनके साथ **4400 शिष्य** थे। वे भी साथ ही दीक्षित हुए। 11 गणधरों के नाम इस प्रकार हैंः–

1. इन्द्रभूति जी, 2. अग्निभूति जी, 3. वायुभूति जी, 4. व्यक्त स्वामी जी, 5. सुधर्मा स्वामी जी, 6. मण्डितपुत्र जी, 7. मौर्यपुत्र जी, 8. अकंपित जी, 9. अचल भ्राता जी, 10. मेतार्य स्वामी जी, 11. प्रभास स्वामी जी।

12. ऐसे थे महावीर

1 जन्म तिथि
चैत्र शुक्ल त्रयोदशी (महावीर जयन्ती)

2 जन्म स्थान
कुंडलपुर (बिहार)

3 माता
रानी त्रिशला

4 पिता
राजा सिद्धार्थ

5 बचपन का नाम
वर्धमान

6 भाई
नन्दीवर्धन

7 बहन
सुदर्शना

8 पत्नी
यशोदा

9 पुत्री
प्रियदर्शना

10 Height
7 हाथ
(Approx. 6.6 ft.)

11 दीक्षा की उम्र
30 साल

12 साधना काल
12.5 Years

13 उत्कृष्ट तप
180 उपवास

14 शिष्य
गौतम स्वामी आदि 14000

15 शिष्या
चन्दन बाला आदि 36000

16 उम्र (Age)
72.5 Years

17 मोक्ष
कार्तिक अमावस्या (दीपावली)

18 उपदेश
- जीओ और जीने दो ।
- सत्य बोलो ।
- जो मिला, उसमें खुश रहो ।

13. सीखो महावीर से

भगवान् ने माँ के गर्भ में ही संकल्प कर लिया था कि वे ऐसा कोई काम नहीं करेंगे, जिससे उनके माता-पिता को कष्ट हो।

Devotion towards parents

भगवान् ने अपने बड़े भाई नंदीवर्द्धन की बात मानकर अपनी दीक्षा को Postpone कर दिया था।

Respect for elders

भगवान् न किसी से डरते थे और न ही किसी को डराते थे।

No Fear

Self Reliance

जब इन्द्र ने प्रभु को कहा- मुझे अपने साथ रख लीजिए ताकि मैं आप पर आने वाले कष्ट मिटा सकूं, तब प्रभु बोले- No, thanks, मैं स्वयं कष्टों का सामना करूँगा।

Calmness

चण्डकौशिक सांप ने प्रभु को डंक मारा, तो भी प्रभु महावीर बिल्कुल शांत रहे।

Affection towards kids

प्रभु के पास एक छोटा बच्चा अतिमुक्त कुमार आया तो भगवान् ने बड़े प्यार से उसे धर्म की बातें समझाई, उसे बच्चा समझ कर ignore नहीं किया।

No hatred towards sinner

अर्जुन माली जैसे हत्यारे से भी प्रभु महावीर ने घृणा नहीं की, बल्कि अपनी शरण में रखकर उसका जीवन ही बदल डाला।

Detachment from taste

5 महीने 25 दिन की घोर तपस्या का पारणा भगवान् महावीर ने रूखे-सूखे भोजन से खुशी-खुशी किया।

Support for truth

सत्य का समर्थन करते हुए भगवान् ने अपने सबसे बड़े शिष्य गौतम स्वामी जी से क्षमा मंगवाई, गौतम जी की post के सामने सत्य को ignore नहीं किया।

14. बत्तीस आगम

जगत् के सब जीवों की रक्षा और दया के लिए तीर्थंकर भगवान् धर्म-देशना देते हैं। भगवान् की यह वाणी **सूत्र, शास्त्र या आगम** कहलाती है।

आगम के तीन भेद हैं- **सूत्रागम, अर्थागम और उभयागम**। 'धम्मो मंगलमुक्किट्ठं' यह मूल पाठ सूत्रागम है। 'धर्म उत्कृष्ट मंगल है' यह अर्थागम है। दोनों मिलकर उभयागम या तदुभयागम कहलाते हैं। तीर्थंकर भगवान् अर्थरूप आगम की देशना देते हैं, उनके प्रधान शिष्य (गणधर) उनको सूत्र-रूप में ग्रथित करते हैं। इनके आधार पर कुछ विशिष्ट ज्ञानी आचार्य अन्य सूत्रों की भी रचना करते हैं।

तीर्थंकर प्रभु का सम्पूर्ण उपदेश **बारह अंगों** में समाविष्ट होता है। उस उपदेश को उनके गणधर यत्नपूर्वक संभाल कर रखते हैं, इसलिए सम्पूर्ण शास्त्र-भंडार **'द्वादशांग-गणि-पिटक'** कहलाता है।

भगवान् महावीर स्वामी ने भी तीर्थ-स्थापना करते हुए गौतम आदि 11 गणधरों को द्वादशांग-वाणी का उपदेश दिया। वीर-निर्वाण के 1000 वर्ष बाद (सन् 473 ई.) 12वां अंग 'दृष्टिवाद' काल-प्रभाव से लुप्त हो गया। अन्य 11 आगमों के भी बहुत से पाठ समाप्त हो गए। सिन्धु में से बिन्दु-मात्र ही शेष रहा।

तीर्थंकरों का उपदेश गणधरों द्वारा मौखिक रूप से ग्रहण किया जाता है, जो गुरु-शिष्य-परम्परा द्वारा आगे से आगे प्रचारित होता है। आगम ज्ञान की इस निधि (खजाना) को संभालने/व्यवस्थित करने या लिपिबद्ध करने के लिए इतिहास में तीन प्रयास हुए हैं।

प्रथम प्रयास वीर निर्वाण संवत् 160 वर्ष के लगभग नेपाल देश में हुआ, जब आचार्य भद्रबाहु ने स्थूल-भद्र मुनि को 14 पूर्वों का ज्ञान दिया। द्वितीय प्रयास वीर नि. 827 (सन् 300) में हुआ। तृतीय प्रयास वीर निर्वाण संवत् 980 (सन् 453) में आचार्य देवर्द्धिगणी क्षमाश्रमण के नेतृत्व में वलभी नगरी (गुजरात) में

हुआ। इसमें लगभग 84 जैन आगमों को व्यवस्थित करके लिपिबद्ध किया गया। वर्तमान में 11 अंग एवं 21 अन्य, कुल 32 आगम उपलब्ध हैं। इनकी भाषा अर्धमागधी प्राकृत है। स्थानकवासी व तेरापन्थी सम्प्रदाय इनको मान्य करते हैं। श्वेताम्बर मूर्तिपूजक इन 32 के अतिरिक्त 13 और आगम मानते हैं। अतः वे कुल 45 आगम मानते हैं।

32 आगम पाँच भागों में विभक्त हैं। उनके नाम इस प्रकार हैंः—

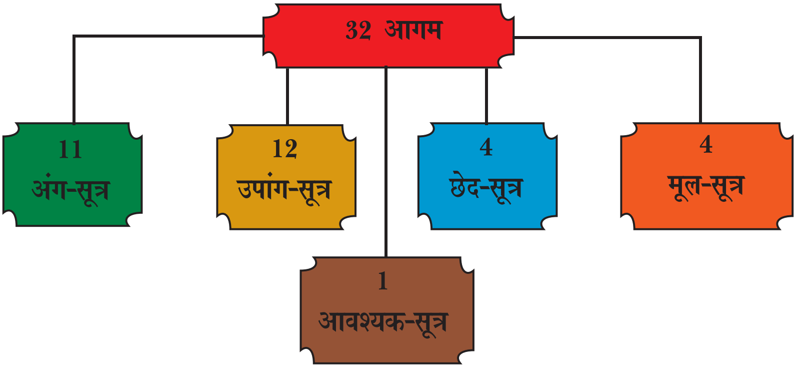

11 अंग-सूत्र-	1. आचारांग, 2. सूत्रकृतांग, 3. स्थानांग, 4. समवायांग, 5. व्याख्या-प्रज्ञप्ति (भगवती), 6. ज्ञाताधर्म-कथांग 7. उपासक-दशांग 8. अन्तकृद्-दशांग 9. अनुत्तरौपपातिक 10. प्रश्न-व्याकरण 11. विपाक।
12 उपांग-सूत्र-	1. औपपातिक, 2. राजप्रश्नीय, 3. जीवाजीवाभिगम, 4. प्रज्ञापना, 5. जम्बूद्वीप-प्रज्ञप्ति, 6. चन्द्र-प्रज्ञप्ति, 7. सूर्य-प्रज्ञप्ति, 8. निरयावलिका, 9. कल्पावतंसिका, 10. पुष्पिका, 11. पुष्पचूलिका, 12. वृष्णिदशा।
4 छेद-सूत्र-	1. व्यवहार, 2. बृहत्कल्प, 3. निशीथ, 4. दशा-श्रुतस्कन्ध।
4 मूल-सूत्र-	1. दशवैकालिक, 2. उत्तराध्ययन, 3. नन्दी, 4. अनुयोगद्वार।
1 आवश्यक-सूत्र	

इन 32 शास्त्रों के मूल, अर्थ या उभय (दोनों) का स्वाध्याय करने से ज्ञानावरणीय-कर्म का क्षय होता है, मोहनीय कर्म की शृंखलाएं टूटती हैं और आत्मा विकास करती-करती अरिहन्त और सिद्ध अवस्था को प्राप्त करती है।

15. Jain Logo

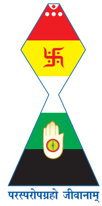

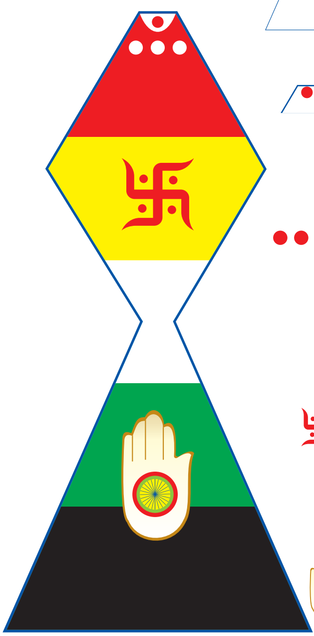

परस्परोपग्रहो जीवानाम्

(नोटः- यह Logo सन् 1974 में भगवान् महावीर स्वामी के 2500वें निर्वाण वर्ष में दिल्ली में निश्चित किया गया था)

- यह Universe की Shape है। इसे लोक कहते हैं।
- Solar system, Galaxies आदि सब कुछ इस के अंदर समा जाते हैं।
- इसके बाहर सिर्फ आकाश (Space) है।

यह Universe का Top है।
इस स्थान पर सिद्ध भगवान् (Liberated Souls) रहते हैं।

सिद्ध होने के लिए तीन उपाय हैं :-
सम्यग् ज्ञान (Right Knowledge)
सम्यग् दर्शन (Right Faith)
सम्यक् चारित्र (Right Conduct)

इसकी चार दिशाएँ कहती हैं कि
संसार में चार तरह के जीव हैं :-
1. देव (Deities) 2. नरक (Hellish Beings)
3. तिर्यंच (Plants, Animals etc.)
4. मनुष्य (Human Beings)

Ahimsa Hand :-
इसमें 24 Lines 24 तीर्थंकरों की प्रतीक हैं।
सभी तीर्थंकरों का संदेश है- जीओ और जीने दो।

सभी जीव एक-दूसरे की Help करते हैं,
वे आपस में Interdependent होते हैं।
(जैसे- एक घर बनाने में मिस्त्री, मजदूर, Engineer, Painter, Carpenter आदि सब एक-दूसरे के काम में सहयोगी बनते हैं।)

16. Body Parts

Uses	Body Part	Misuses
1. नमस्कार करना। 2. सबका भला सोचना।	 Head	1. Negative सोचना। 2. दिमाग गर्म रखना (गुस्सा करना)
1. Parents की बात सुनना। 2. Motivational Speech सुनना।	 Ears	1. छुपकर किसी की बात सुनना। 2. किसी की बुराई सुनना।
1. गुरु-दर्शन करना। 2. अच्छी Books पढ़ना।	 Eyes	1. I-Pad, Mobile देखते रहना। 2. किसी को बुरी नजरों से देखना।
1. Respect देकर बोलना। 2. Prayer करना।	 Mouth	1. गालियाँ देना। 2. Fast Food ज्यादा खाना।
1. दान करना। 2. सेवा करना।	 Hands	1. चोरी करना। 2. थप्पड़, मुक्का मारना।
1. अपने धर्म स्थान में जाना। 2. Walking करके स्वस्थ रहना।	 Legs	1. जीवों को कुचलना। 2. Fighting करना।

बुरा मत सोचो।

बुरा मत सुनो।

बुरा मत देखो।

बुरा मत बोलो।

सामान्य ज्ञान व कथा विभाग

17. अंगुलियाँ क्या कहती हैं?

एक मनुष्य ही ऐसा है, जो भगवान् बन सकता है :-

नरक के जीव भगवान् को याद कर सकते हैं।
देवता भगवान् के दर्शन कर सकते हैं।
जानवर भगवान् के पीछे-2 चल सकते हैं।
पर मनुष्य स्वयं भगवान् बन सकता है।

दो दिशाएँ (Directions) धर्म-ध्यान के लिए विशेष मानी जाती हैं :-

1. East (पूर्व) 2. North (उत्तर)

तीन व्यक्ति हमारे हित-चिन्तक (Well - Wisher) होते हैं :-

1. माता-पिता (Parents) 2. शिक्षक (Teacher) 3. धर्मगुरु (Preacher)

इंसान के सबसे बड़े दुश्मन चार हैं :-

(1) क्रोध (Anger) (2) मान (Ego)
(3) माया (Deceit) (4) लोभ (Greed)

तीर्थंकर भगवान् के 5 कल्याणक (Special Occasions) होते हैं :-

1. गर्भ कल्याणक (माता के गर्भ में आना)
2. जन्म कल्याणक
3. दीक्षा कल्याणक
4. केवल ज्ञान कल्याणक
5. निर्वाण कल्याणक (मोक्ष प्राप्ति)

18. इतिहास के झरोखे से

1. सम्राट चन्द्रगुप्तः ये वीर निर्वाण की दूसरी शताब्दी में (ईसा से लगभग 325 वर्ष पूर्व) भारतवर्ष के अतितेजस्वी सम्राट् हुए। इन्होंने विद्वान ब्राह्मण चाणक्य के निर्देशन में अत्याचारी नन्द वंश को उखाड़ कर मौर्यवंश की स्थापना की। ई. पू. 305 में यूनान नरेश सैल्यूकस ने भारत पर आक्रमण किया। तब सम्राट् ने उसे युद्ध में करारी मात दी और काबुल, कान्धार तक के प्रदेशों को यूनानी दासता से मुक्त कराकर अपना साम्राज्य स्थापित किया। ज्ञात इतिहास में भारतवर्ष में आज तक इतना बड़ा सम्राट् अन्य कोई नहीं हुआ।

इतिहास की बिखरी कड़ियों के जोड़ने से आज ये सिद्ध हो चुका है कि चन्द्रगुप्त एक जैन राजा थे। उनके गुरु चाणक्य भी जैन धर्म-सिद्धान्तों पर दृढ़ आस्था रखते थे। वीर-शासन के पाँचवें आचार्य भद्रबाहु के साथ चन्द्रगुप्त की अनेक वार्ताएं व घटनाएं मिलती हैं। एक बार उनको रात्रि में 16 स्वप्न आए, जिनका विश्लेषण आचार्य भद्रबाहु ने किया। उल्लेखों से यह प्रमाणित होता है कि 25 वर्ष शासन करने के बाद चन्द्रगुप्त ने अपने पुत्र बिन्दुसार को राज्य सौंपकर स्वयं जैन मुनि की दीक्षा ली और श्री श्रवणबेलगोला तीर्थ पर संथारापूर्वक शरीर-त्याग किया।

2. आशाशाह और पन्नाधायः आशाशाह मेवाड़ (राजस्थान) के एक साहसी जैन युवक थे। ये कुम्भलनेर दुर्ग के दुर्गपाल पद पर नियुक्त थे। उस समय महाराणा रत्नसिंह की मृत्यु के बाद दासीपुत्र बनवीर ने उत्तराधिकारी विक्रमाजीत को मारकर सिंहासन पर अधिकार कर लिया। विक्रमाजीत का लघुभ्राता उदय सिंह अभी शिशु था। बनवीर उसे भी मारना चाहता था। तब राज-परिवार की एक सेविका पन्नाधाय, जो एक जैन श्राविका थी, ने अपने पुत्र का बलिदान देकर उदयसिंह की प्राण-रक्षा की। शिशु उदय को लेकर पन्नाधाय चित्तौड़ से निकल गई। उसने अनेक सामन्त-सरदारों के पास जाकर उदय सिंह को शरण देने की याचना की। मृत्यु-भय से कोई भी तैयार नहीं हुआ। तब वह आशाशाह के पास पहुँची। पहले-पहल वे भी झिझके। तब उनकी माँ एकदम कटार निकाल कर उन पर झपटी कि ऐसे कायर पुत्र से तो मैं निपूती ही भली थी।

इससे आशाशाह को उत्साह मिला। उन्होंने उदय को गोद में लेकर प्रण किया कि मैं प्राण देकर भी मेवाड़ के इस शिशु की रक्षा करूँगा। आशाशाह ने उदय सिंह को अपना 'भतीजा' प्रचारित कर पालन किया। समय आने पर उदय सिंह चित्तौड़ के राज-सिंहासन पर आसीन हुआ।

3. भामाशाहः मेवाड़ (राजस्थान) के विख्यात योद्धा भामाशाह ओसवाल जैन थे (जन्म 27.1.1547, निधन 28.1.1640)। ये महाराणा प्रताप के मन्त्री भी थे और अन्तरंग सखा भी। इन्होंने जैन होते हुए भी, मातृभूमि के गौरव की रक्षा-हेतु, हल्दीघाटी के युद्ध में अपनी तलवार के अद्भुत जौहर दिखाए। महाराणा उस युद्ध में हार कर वनों में भाग गए थे। न उनके पास सेना बची थी, न धन। वे अपने बच्चों को घास की रोटी खिलाने पर मजबूर हो गए थे। एक समय ऐसा भी आया, जब वे अपनी राजपूती आन-बान को गिरवी रखकर बादशाह अकबर से सन्धि करने को तैयार हो गए थे। तभी वीर भामाशाह उनके चरणों में पहुँचे और अपनी सारी सम्पत्ति उनके चरणों में अर्पित कर दी। भामाशाह के दिए धन के बल पर महाराणा की 25,000 सैनिकों की सेना का 12 वर्ष के लिए निर्वाह चला। इससे सेना में एक नवीन उत्साह का संचार हुआ और अन्ततः मुगलसेना को मेवाड़ से खदेड़ दिया गया।

4. दीवान अमर चन्द जैनः ये जयपुर नरेश के विशेष कृपापात्र थे। बड़े ही सत्य-निष्ठ, मधुरता और करुणा आदि गुणों से ओतप्रोत। एक बार राजा ने वन से एक शेर को पकड़ा। दरबारियों से पूछा कि कौन इस शेर के लिए माँस आदि का प्रबन्ध करेगा? इस पर दीवान जी ने कहा, 'महाराज, क्या यह अनिवार्य है कि शेर को माँस ही खिलाया जाए?' राजा ने व्यंग्य किया, 'तो क्या आप शेर को जलेबियां खिलाएंगे?' दीवान ने विश्वासपूर्वक कहा, 'क्यों नहीं महाराज! आप यदि आज्ञा दें, तो मैं शेर को जलेबियां भी खिला सकता हूँ।'

राजा ने शेर को दीवान जी के अधिकार में सौंप दिया। वे तीन दिन तक शेर के पिंजरे में जलेबियों के थाल भिजवाते रहे, पर शेर ने उनको नहीं खाया। चौथे दिन दीवान जी स्वयं जलेबियों का थाल लेकर शेर के पिंजरे में गए और निवेदन किया, 'वनराज, ये जलेबियां हैं। इनको खाकर अपनी भूख शान्त करो, अन्यथा मैं प्रस्तुत हूँ, मुझे खा डालो।' कहते हैं, शेर एक बार तो गुर्राया, पर फिर जलेबी खा ली। यह था एक अहिंसक की अहिंसा का चमत्कार!

5. आचार्य हीर विजय सूरि (1528-1597 ई.): ये जैन धर्म-शासन के विशेष प्रभावक आचार्य हुए। बादशाह अकबर के दरबार में उनको विशेष सम्मान प्राप्त था। जब कभी वे दरबार में पधारते, तब बादशाह सिंहासन से खड़े होकर उनका स्वागत करते थे। आचार्य श्री के उपदेश से प्रभावित होकर बादशाह ने न केवल माँसाहार का सेवन काफी कम कर दिया, अपितु जैन पर्व 'पर्यूषण' के आठ दिनों में पशुवध और शिकार पर प्रतिबन्ध लगाने का फरमान भी जारी किया।

19. ज्ञान वृद्धि के उपाय

बच्चों! अगर आपको अपने ज्ञान (Knowledge) को बढ़ाना है तो निम्न लिखित बातों का पालन करने से आपका ज्ञान बढ़ जाएगा:–

1. परिश्रम (Hard work) करने से
2. नींद (Sleep) कम करने से
3. भूख से कम खाकर
4. मौन (Silent) रह कर
5. ज्ञानी के पास अभ्यास करने से
6. गुरु की विनय करने से
7. संसार के प्रति वैराग्य के साथ ज्ञान सीखने से
8. सीखे हुए ज्ञान का परावर्तन (Revision) करने से
9. पाँचों इन्द्रियों (Senses) को वश में करने से
10. ब्रह्मचर्य (Celibacy) का पालन करने से
11. कपट रहित तप करने से

काव्य विभाग

20. जिनवाणी स्तवन

जय-जय जिनवाणी नमो-नमो।
त्रिभुवन कल्याणी नमो-नमो (टेक)

1. मुक्ता की माला नमो-नमो, निधियों की शाला नमो-नमो।
   रत्नों की खानी नमो-नमो ॥
2. वैभव की दात्री नमो-नमो, कल्याण विधात्री नमो-नमो।
   देवी ब्रह्माणी नमो-नमो ॥
3. सब जग की माता नमो-नमो, आगम-विख्याता नमो-नमो।
   आत्मा की कहानी नमो-नमो ॥
4. जिनपति की करुणा नमो-नमो, जिनशासन-महिमा नमो-नमो।
   अरिहन्त निशानी नमो-नमो ॥
5. हे तीर्थ सुपावन नमो-नमो, निर्वृति की कारण नमो-नमो।
   हे अमृत-निधानी नमो-नमो ॥

21. मंगल पाठ

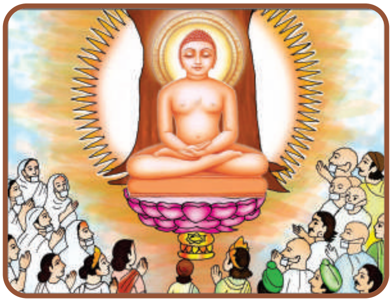

मंगल करने वाला, कुशल-क्षेम करने वाला और इस भव (जन्म) व परभव में कल्याण करने वाला मन्त्र 'मंगल-पाठ' कहलाता है। जैन उपासक प्रत्येक कार्य के प्रारम्भ में गुरुजनों से निम्नलिखित मंगल पाठ सुनते हैं (मंगल-पाठ को 'चतुःशरण सूत्र' भी कहते हैं)। यह इस प्रकार हैः—

1. चत्तारि मंगलं, अरिहंता मंगलं, सिद्धा मंगलं,
साहू मंगलं, केवलि-पण्णत्तो धम्मो मंगलं ॥

अर्थः— लोक में चार मंगल हैं- अरिहन्त मंगल हैं, 2. सिद्ध मंगल हैं, 3. साधु मंगल हैं, 4. केवली-प्रणीत (तीर्थंकरों द्वारा फरमाया गया) जिन-धर्म मंगल है।

2. चत्तारि लोगुत्तमा-अरिहंता लोगुत्तमा, सिद्धा लोगुत्तमा,
साहू लोगुत्तमा, केवलिपण्णत्तो धम्मो लोगुत्तमो।

अर्थः— लोक में चार उत्तम हैं- 1. अरिहंत उत्तम हैं, 2. सिद्ध उत्तम हैं, 3. साधु उत्तम हैं, 4. केवली-प्रणीत जिन-धर्म उत्तम है।

3. चत्तारि सरणं पवज्जामि-अरिहंते सरणं पवज्जामि,
सिद्धे सरणं पवज्जामि,
साहू सरणं पवज्जामि,
केवलि-पण्णत्तं धम्मं सरणं पवज्जामि।

अर्थः— मैं चार की शरण ग्रहण करता हूँ। 1. अरिहंतों की शरण ग्रहण करता हूँ। 2. सिद्धों की शरण ग्रहण करता हूँ। 3. साधुओं की शरण ग्रहण करता हूँ। 4. केवली प्रणीत जिन-धर्म की शरण ग्रहण करता हूँ।

चार शरण दुख-हरण जगत् में, और न शरणा कोई होगा।
जो भव्य प्राणी करे आचरण, उसका अजर अमर पद होगा ॥
उसका सदा ही मंगल होगा ॥

1. जन्मदाता, विद्यादाता एवं धर्मदाता की सेवा सदा फलदायी होती है।

2. बोलने के तरीके से इंसान की सज्जनता का पता लगता है।

3. आगम सब व्यथाओं का ईलाज है।

4. ज्ञानवान बनने की अपेक्षा चारित्रवान बनना श्रेष्ठ है।

5. अपनी चिंता अपने ही विचारों से खत्म होगी।

6. सात कुव्यसनों से दूर रहने वाला ही अच्छा इंसान बन सकता है।

7. विद्या पाने का लक्ष्य है सत्य को पाना

8. जहाँ विश्वास नहीं वहाँ डर है।

9. अगर बड़ों को गुस्सा दिला रहे हो तो समझो अपने ही पुण्य का क्षय कर रहे हो।

10. यदि सामायिक नहीं करते तो समझो अभी भगवान् का धर्म नहीं फरसा।

11. जो शिष्य सुपात्र है वह दो बातें कभी नहीं करेगा 1. गुरु की अविनय 2. गुरु की निंदा

भाग-2

जैन संस्कार शिविर समिति, दिल्ली के मुख्य उद्देश्य

1. जैन धर्मानुसार जीवन-शैली अपनाकर आनन्द-युक्त जीवन (blissful life) बनाना।
2. जैन धर्म के समृद्ध इतिहास, संस्कृति, दर्शन और साधना पद्धति को अत्यन्त सरल व आधुनिक तकनीक से सिखाना।
3. सम्प्रदाय-निरपेक्ष धर्म की सही जानकारी देना।
4. परिवार, समाज व राष्ट्र के प्रति वफादार और जागरूक नागरिक तैयार करना।
5. स्वाध्याय-शील बनने की प्रेरणा देना।
6. भय-मुक्त धार्मिक क्रियाओं की तरफ प्रेरित करना।